

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja College Ara
Date; 15/10/2025
Class: U.G Semester - 3rd
(MJC-3)
Development I Psychology,
Topic- introduction of development psychology

जीवन काल परिप्रेक्ष्य
(LIFE SPAN PERSPECTIVE)

1. जीवन काल परिप्रेक्ष्य / विकास की अवधारणा

जीवनकाल विकास में सम्पूर्ण जीवन काल के दौरान होने वाले जैविक, संज्ञानात्मक एवं मनोसामाजिक परिवर्तनों एवं स्थिरताओं की खोज शामिल है। जीवन काल विकास (Lifespan Development) आयु से सम्बन्धित परिवर्तनों को सन्दर्भित करता है जो एक व्यक्ति के जीवन में, जन्म से लेकर वृद्धावस्था के दौरान होते हैं। इसमें केवल विकास के जैविक और भौतिक पहलू ही शामिल नहीं हैं, बल्कि विकास से जुड़े संज्ञानात्मक और सामाजिक पहलू भी शामिल हैं। जर्मन मनोवैज्ञानिक पॉल बाल्ट्स, जो जीवन काल के विकास और उम्र बढ़ने के एक प्रमुख विशेषज्ञ हैं, ने विकास का अध्ययन करने के लिए एक दृष्टिकोण विकसित किया जिसे जीवन काल परिप्रेक्ष्य कहा जाता है। विकासात्मक मनोविज्ञान, जिसे मानव विकास (Human Development) या आजीवन विकास (Lifespan Development) के रूप में भी जाना जाता है, उन तरीकों का वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें यह समझने तथा समझाने का प्रयास किया जाता है कि लोग जीवन भर (गर्भाधान से मृत्यु तक) कैसे और क्यों बदलते हैं। विकास का वैज्ञानिक अध्ययन न केवल मनोविज्ञान के लिए, बल्कि समाजशास्त्र, शिक्षा एवं स्वास्थ्य देखभाल के लिए भी महत्वपूर्ण है। लोग कैसे और क्यों बदलते और बढ़ते हैं, इसे बेहतर तरीके से समझकर, इस ज्ञान को लोगों को उनकी पूरी क्षमता से जीने में सहायता करने के लिए लागू किया जा सकता है। यह क्षेत्र मोटर कौशल और अन्य मनो-शारीरिक प्रक्रियाओं सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला में परिवर्तन की जांच करता है।

जीवन काल विकास में कई मुद्दे शामिल हैं जैसे, निरन्तरता एवं निरन्तरता, स्थिरता एवं परिवर्तन, प्रकृति बनाम पोषण आदि। कई शोधकर्ता व्यक्तिगत विशेषताओं, व्यक्ति के व्यवहार एवं सामाजिक संदर्भ सहित पर्यावरणीय कारकों एवं विकास पर उनके प्रभाव के बीच बातचीत में रुचि रखते हैं।

अमेरिकन जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रीशन के अनुसार, मानव जीवन काल, या मानव जीवन के लिए अधिकतम संभव समय, 130 वर्ष है। मानव शरीर समय के साथ काफी बदल जाते हैं एवं भोजन उन परिवर्तनों के लिए ईवन का काम करता है। पूरे मानव जीवन चक्र के दौरान, शरीर लगातार बदलता रहता है और विभिन्न अवधियों के माध्यम से जाना जाता है।

परिवर्तन का प्रतिरूप जो गर्भधारण से शुरू होता है एवं जीवन चक्र के माध्यम से जारी रहता है जीवन काल विकास कहलाता है।

एजुकेशनल फाउंडेशन, 2001 के अनुसार, जीवन काल विकास एक प्रक्रिया है जो गर्भाधान से शुरू होती है एवं मृत्यु तक जारी रहती है।

2. जीवन काल विकास की प्रकृति एवं सिद्धान्त (Nature and Principles of Lifespan Development)

जीवन अवधि विकास के अग्रणी विशेषज्ञ, जर्मन मनोवैज्ञानिक पॉल बाल्ट्स (1987) ने विकास का अध्ययन करने के लिए सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत दृष्टिकोणों में से एक की स्थापना की, जिसे जीवन काल परिप्रेक्ष्य कहा जाता है। आपने इस परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत कई अंतर्निहित सिद्धांतों की पहचान की है जो इस प्रकार हैं-

(1) विकास आजीवन होता है (Development is Lifelong)- विकास व्यक्ति के पूरे जीवन भर होता है, या आजीवन होता है। आजीवन विकास का अर्थ है कि विकास

शैशवावस्था या बचपनावस्था या किसी विशिष्ट आयु में पूरा नहीं होता है। इसमें गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक संपूर्ण जीवन काल शामिल है। अतः यह धारणा वा सिद्धांत बताता है कि विकास में, सम्पूर्ण आयु अवधि, समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकास का अध्ययन परंपरागत रूप से लगभग विशेष रूप से गर्भाधान से किशोरावस्था तक होने वाले परिवर्तनों और बुढ़ापे में क्रमिक गिरावट पर केंद्रित होता है। यद्यपि परिवर्तन के कई विविध पैटर्न, जैसे दिशा, समय और क्रम, व्यक्तियों के बीच भिन्न हो सकते हैं और उनके विकास के तरीकों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, घटनाओं का विकासात्मक समय व्यक्तियों को उनकी परिपक्वता और समझ के वर्तमान स्तर के कारण अलग-अलग तरीकों से प्रभावित कर सकता है। जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ते हैं, उन्हें कई चुनौतियों, अवसरों और परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जो उनके विकास को प्रभावित करते हैं। ऐसा माना जाता था कि किशोरावस्था के बाद के पाँच या छह दशकों में विकासात्मक परिवर्तन बहुत कम या बिल्कुल नहीं होता। वर्तमान दृष्टिकोण इस संभावना को दर्शाता है कि विकास में विशिष्ट परिवर्तन जन्म के समय स्थापित हुए बिना, जीवन में बाद में हो सकते हैं। किसी के बचपन की शुरुआती घटनाएं उसके जीवन में बाद की घटनाओं से बदल सकती हैं। यह विश्वास स्पष्ट रूप से इस बात पर बल देता है कि जीवन काल के सभी चरण मानव विकास की प्रकृति के नियमन में योगदान करते हैं। अतः जीवन काल की प्रत्येक अवधि पहले जो घटित हुई उससे प्रभावित होती है और जो आने वाली है उससे भी प्रभावित होती है।

(2) विकास बहुआयामी है (Development is Multidimensional)-विकास बहुआयामी है, जिसका अर्थ है कि विकास एक आयाम में नहीं हो सकता, बल्कि इसमें सभी आयामों (शारीरिक, संज्ञानात्मक एवं मनोसामाजिक) की गतिशील बातचीत शामिल है अर्थात् यह शारीरिक, भावनात्मक एवं मनोसामाजिक विकास जैसे कारकों में विकास का परिणाम है। शारीरिक डोमेन में ऊँचाई और वजन, संवेदी क्षमताओं, तंत्रिका तंत्र. साथ ही बीमारी और बीमारी की प्रवृत्ति में परिवर्तन शामिल हैं। संज्ञानात्मक डोमेन में बुद्धि, ज्ञान, धारणा, समस्या समाधान, स्मृति और भाषा में परिवर्तन शामिल हैं एवं मनोसामाजिक डोमेन भावनाओं, आत्म-धारणा और परिवारों, साथियों और दोस्तों के साथ पारस्परिक सम्बन्धों में बदलाव पर केंद्रित है। बाल्ट्स तर्क देते हैं कि कारकों (जैविक, संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक परिवर्तन) की एक जटिल परस्पर क्रिया जीवन भर विकास को प्रभावित करती है। अर्थात् इन कारकों की गतिशील अंतःक्रिया ही किसी व्यक्ति के विकास को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, किशोरावस्था में, यौवन में हार्मोन के स्तर में परिवर्तन, प्राथमिक और माध्यमिक यौन विशेषताओं का विकास, ऊँचाई और वजन में परिवर्तन और कई अन्य शारीरिक परिवर्तन शामिल होते हैं। लेकिन ये एकमात्र प्रकार के परिवर्तन नहीं हो रहे हैं। इसमें संज्ञानात्मक परिवर्तन भी होते हैं, जिनमें उन्नत संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास जैसे अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता भी शामिल है। भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तन भी होते हैं जिनमें भावनाओं को नियंत्रित करना, साथियों के साथ बातचीत करना और संभवतः डेटिंग शामिल है। यहां यह ध्यान

रखना भी महत्वपूर्ण है कि एक डोमेन में परिवर्तन तेजी से हो सकता है और अन्य डोमेन में परिवर्तन का संकेत दे सकता है।

(3) विकास बहुदिशात्मक होता है (Development is Multidirectional)-विकास बहुदिशात्मक होता है और इसका परिणाम जीवन भर लाभ और हानि होता है। यह सिद्धान्त या धारणा बताती है कि विकास का कोई एकल एवं निश्चित मार्ग नहीं है। बल्कि विकास एक से अधिक दिशाओं में होता है। क्योंकि विकास का मतलब यह नहीं है कि हमेशा विकास होगा, बल्कि, विकास के किसी भी बिंदु पर विकास और गिरावट की संयुक्त अभिव्यक्ति हो सकती है। जैसे लोगों को एक में लाभ तथा दूसरे में नुकसान हो सकता है। उदाहरण के लिए, बच्चे एक ही दिशा में बड़े होते हैं यानी वे आकार एवं क्षमताओं में बड़े होते हैं। हालाँकि, जैसे-जैसे किशोरों की शारीरिक क्षमता बढ़ती है, वे भाषा सीखने की क्षमता खो देते हैं। हालाँकि वयस्कता के दौरान शब्दावली बढ़ती रहती है जबकि अन्य क्षमताएँ जैसे अपरिचित समस्याओं को हल करने की क्षमता कम हो सकती है।

(4) विकास प्लास्टिक है (Development is Plastic) विकास प्लास्टिक है। प्लास्टिसिटी पूरी तरह से बदलने की व्यक्ति की क्षमता को सम्बोधित करता है। व्यक्ति की कई विशेषताएँ निंदनीय या परिवर्तनशील हैं अर्थात् विकास में अत्यधिक परिवर्तनशीलता या लचीलापन का गुण होता है। लचीलापन का मतलब है कि व्यक्ति के पास अनुकूलन एवं संशोधित करने की क्षमता है। इसका मतलब है कि व्यक्ति अपने जीवन काल में कौशल एवं क्षमता विकसित कर सकता है। याददाश्त, ताकत, सहनशक्ति जैसी कई क्षमताएँ जीवन भर बदलती रहती हैं एवं व्यक्ति के पास चोटों एवं दुर्घटनाओं से शारीरिक एवं मानसिक रूप से उबरने की क्षमता भी होती है।

(5) विकास बहु-संदर्भात्मक या बहुविषयक है (Development is Multicontextual or Multidisciplinary) प्रत्येक व्यक्ति कई संदर्भों में विकसित होता है। अतः विकासात्मक प्रक्षेप वक्र को केवल एक कारक प्रभावित नहीं करता है बल्कि विकासात्मक प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कई परस्पर क्रिया कारक हैं। बाल्ट्स के अनुसार, इस तरह के तीन कारकों में आयु वर्गीकृत श्रेणी प्रभाव, जिसमें व्यक्ति विशेष आयु वर्ग जैसे कि बच्चा होना, किशोरावस्था, इतिहास-वर्गीकृत प्रभाव, जिसमें कुछ हद तक जीवविज्ञान द्वारा परिभाषित परिस्थितियाँ एवं कुछ हद तक स्थान एवं समय शामिल हैं एवं गैर-मानक प्रभाव जैसे कि वे अनुभव जो प्रत्येक मनुष्य के लिए अद्वितीय होते हैं। शामिल हैं। इस प्रकार विकास इन विभिन्न कारकों की अंतःक्रिया से प्रभावित होता है।

(i) आयु श्रेणी प्रभाव मानक आयु वर्गीकृत प्रभाव वे जैविक एवं पर्यावरणीय कारक हैं जिनका कालानुक्रमिक आयु जैसे- शिशु, किशोर, या वरिष्ठ आदि, के साथ मजबूत सम्बन्ध होता है। समान आयु वर्ग से सम्बन्धित लोग, समान जैविक परिवर्तनों के कारण समान अनुभव और विकासात्मक परिवर्तन सा 2) करते हैं। हालांकि उनके अनुभव साझा सामाजिक रीति-रिवाजों एवं मूल्यों जैसे पांच वर्ष से स्कूल शुरू करने या अठारह वर्ष की आयु में ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने, के कारण समान हो सकते हैं।

(ii) इतिहास वर्गीकृत प्रभाव मानक इतिहास-वर्गीकृत प्रभाव एक विशिष्ट 3) समयावधि से जुड़े होते हैं जो व्यापक पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक संदर्भ को परिभाषित करता है जिसमें एक व्यक्ति विकसित होता है। उदाहरणों में द कोई प्राकृतिक आपदा आर्थिक समृद्धि या अवसाद या कोई तकनीकी विकास (जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट या मोबाइल फोन) शामिल हैं। इन इतिहास-श्रेणी पैदा हुए लोगों को प्रभावित करती हैं एवं इसलिए लगभग एक ही समय अवधि में जन्म लेने वाले कई मायनों में एक जैसे होते हैं।

(iii) गैर-मानक प्रभाव आयु-श्रेणीबद्ध एवं इतिहास-वर्गीकृत मानक प्रभाव है, यानी बड़ी संख्या में लोगों द्वारा साझा किए जाते हैं। जबकि, कुछ ऐसी घटनाएँ ऐसी होती हैं जो केवल एक व्यक्ति या कुछ लोगों द्वारा अनुभव की जा सकती हैं उन्हें ही गैर-मानक प्रभाव कहते हैं। ये प्रभाव अप्रत्याशित होते हैं एवं किसी व्यक्ति के विकास के किसी निश्चित समय या ऐतिहासिक काल से बंधे नहीं होते हैं। वे किसी व्यक्ति के अनूठे अनुभव हैं, चाहे वह जैविक हो या पर्यावरणीय, जो विकास प्रक्रिया को आकार देते हैं। इनमें मास्टर डिग्री हासिल करना या एक

निश्चित नौकरी की पेशकश प्राप्त करना या तलाक से गुजरना या बच्चे की मृत्यु से निपटना जैसी अन्य घटनाएँ शामिल हो सकती हैं।